प्रस्तावना

बिना संभावनाओं के कोई शोध कार्य संभव नहीं होता। मेरी शोध की संभावना मेरे विषय की अनुकूलता के अनुप्रेरणा से उभरा। मेरा शोध विषय दार्शनिक,धार्मिक और मानवमूल्यों के अंतरसंबंधों से अनुप्रेरित है।

राग और द्वेष से असंपृक्त हो जाना **अनासक्ति** है। कर्त्तव्य कर्म करते समय निस्पृह भाव में चले जाना ही अनासक्ति है। आसक्ति का परित्याग ही मनुष्य को जीवन में उसके लक्ष्य तक पहुँचाता है। कर्म करते हुए उसके फल के प्रति आसक्ति न पैदा होने देने पर ही अनासक्ति का सही अर्थ मिलता है, किन्तु यह अर्थ मुझे तब मालूम था जब तक मैंने इस विषय को जाना नहीं था किन्तु इस विषय को समझने और विनोबा द्वारा इस विषय को जानने के बाद यह समझा जा सकता है कि अनासक्ति भाव ऐसा भाव है जो आसक्त होने के बाद भी निभाया जा सकता है। व्यक्ति आसक्ति रखते हुए भी अपने कर्मो को अनासक्ति भाव से कर सकता है।

गीता एक ऐसा ग्रंथ है जिसके अभ्यास के साथ इसके सभी विषयों को जानने के लिए व्याकुल होना संभवतः आवश्यक है।

इस विषय का सुझाव मुझे मेरे शोध-निर्देशक डॉ.डी.एन प्रसाद सर के द्वारा प्राप्त हुआ। उन्होंने ने मेरी इस विषय में रूचि देखकर ही इस विषय के लिए मुझे सुझाव दिया। उन्होंने हर एक विषय को जो इस शोध का अनिवार्य रूप है, उसके हर एक पहलू को बड़ी ही सरलता और सहजता से समझाया है। हर छोटी-बड़ी गलती को बताया और गलती का सुधार करवाया और एक अच्छी समझ विकसित की गयी।

इसी समझ के परिणाम स्वरूप ‘अनासक्ति दर्शन एवं विनोबा का जीवन’ शीर्षक शोध विषय पल्लवित हुआ जिसका विस्तार चार अध्यायों में विनयस्त हुआ अध्ययन की गत्यात्मकता हेतु जिसमें **प्रथम अध्याय** के अंतर्गत अनासक्ति के अर्थ, पर्याय और दर्शन की व्याख्या की गयी है, जिसमें

अनासक्त निष्काम कर्म की नैतिकता के सिद्धान्तों का विश्लेषण किया गया एवं गीता के अनासक्ति भाव को व्याख्यित भी किया गया है। इससे मोह का निरसन होने की प्रक्रिया पल्लवित होती है

***द्वितीय अध्याय** आचार्य विनोबा भावे के जीवन पर केन्द्रित है। इस अध्याय के अंतर्गत विनोबा भावे के बचपन, विद्यार्थी जीवन से लेकर गृह-त्याग, संत जीवन, महात्मा गांधी से मुलाकात और तदुपरान्त विविध आश्रमों में उनके जीवन का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया, जिसमें विनोबा जी के समाज सुधार के प्रयासों और कई एक आन्दोलनों के सफल संचालन का भी एक संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत है। यह विनोबा के जीवन-संघर्ष से जीवन-लक्ष्य की दिशा प्रदान करता है।

***तृतीय अध्याय** में विनोबा जी के जीवन दर्शन को सामने रखने का प्रयास किया गया है, जिसमें उनके जीवन दर्शन को जानने का मुख्य स्रोत उनका जीवन वृत्तान्त ही है जो कि द्वितीय अध्याय में वर्णित है। इस अध्याय के अंतर्गत उनके जीवन वृत्तान्त के दार्शनिक पहलुओं का अध्ययन किया गया है। उनका जीवन-व्यवहार ही अपने आप में जीवन-दर्शन था। इस अध्याय के आखिर में विनोबा के कुछ अनुकरणीय विचार बिन्दुओं का वर्णन भी किया गया है, जिससे उनके जीवन मूल्य को समझा जा सकता सके।

***चतुर्थ अध्याय** का शीर्षक है,आचार्य विनोबा भावे का अनासक्ति भाष्य। इस शीर्षक के अन्तर्गत विनोबा जी ने अनासक्ति योग "को किस प्रकार से उपदिष्ट किया है'' पर प्रकाश डाला गया है। इसके लिए उनके प्रवचनों को आधार बनाया गया है। साथ ही, चूँकि है उनके प्रवचन शून्य से नहीं उपजे थे इसलिए इस सन्दर्भ में पूर्व के अन्य विचारों को भी जोड़कर देखा गया है। इसी क्रम में, अन्य परम्परा में भी अनासक्ति को कैसे समझा जाता है इसका भी उल्लेख किया गया है, जिससे आचार्य विनोबा के अनासक्ति भाष्य को समझा जा सके।

विषय की जानकारी हेतु अनासक्तियोग पुस्तक और भगवत् गीता जैसे साहित्यों का अध्ययन किया गया है। इस विषय के अध्ययन का उद्देश्य कुछ नया खोजने के लिए है ताकि विषय के सीमित ज्ञान को विस्तृत किया जा सके। विनोबा द्वारा अनासक्ति का भाव क्या है उसको परिभाषित किया जा सके।

***